

श्रुतिदेव lies: adj. zu den Göttern sich haltend und वृषणावतिदेवम्.
श्रुतिपुष्पा, lies श्रुतिमुष्प und 7,112,1 st. 7,113,1.

श्रुतेऽवसायिन् m. ein am Ende der Stadt oder des Dorfes Wohnender,
ein Mann aus niedrigster Kaste MBh. 13,1552. निषादी चापि चाण्डाला-
त्पुत्रमतेऽवसायिन्म् । इमशानगोचरं सूते 2590. Buāg. P. 7,11,30. — Vgl.
श्रुतावसायिन्, श्रुतेवासिन्, श्रुत्यावसायिन्.

श्रुत्यागमन (श्रु + ग) n. fleischlicher Umgang mit einer Frau aus
der niedrigsten Kaste RĀGA-TAR. 5,399.

श्रुत्यानुप्रास (श्रुत्य + श्रु) m. Endalliteration, eine Alliteration am
Ende eines Pada oder Pāda Śāh. D. 637. PANDIT 1,34,b.

श्रुत्यावसायिन् SuCr. 1,410,2.

श्रुत्येष्टि (श्रुत्य + 2. इष्टि) f. Tottenopfer: °कर्मन् Verz. d. Oxf. H. 91,b,13.

श्रुत्, श्रुत्वापीडप्रकारिणम् MBh. 6,2524. — Vgl. श्रुत्.

श्रुत्गुण (श्रु + गुण) m. Mastdarm VjUTP. 100.

श्रुत्वल्लिक (श्रु + व) f. eine best. Pflanze, = मरुषवल्लि RĀGAn.
im ÇKDr. u. dem letzten Worte.

श्रुत्शिला MBh. 6,337. चित्रशिला ed. Bomb.

श्रुत्वी vgl. कृगलाली, वस्ताली, मेषाली.

श्रुत् वgl. कर्पाण्डु.

श्रुत्तलीस Andalusien Verz. d. Oxf. H. 339,a,1.

श्रुत्तलन RĀGA-TAR. 1,209. 5,356. PRAB. 40,6. Ueberall kann auch
श्रुत्तलन angenommen werden.

श्रुत्त m. N. pr. eines Flusses Buāg. P. 5,19,18.

श्रुत्तक 2) b) N. pr. eines Sohnes des Vibudha R. GORR. 1,73,9,10.
Vgl. मरुत्तक. — 3) f. श्रुत् N. eines Nakshatra, = इन्वका WEBER,
Nāx. 2,370.

श्रुत्तकार adj. f. श्रुत् dunkel: गुक्ता MBh. 3,16235. — Vgl. मरुत्तकार.

श्रुत्तकारक m. N. pr. eines Sohnes des Djutimant VP. 199. श्रुत्तकार-
क MĀRK. P.

श्रुत्तमस RAGH. 11,24.

श्रुत्ततामिस्र (so zu lesen) 1) TATTVAS. 34. — 2) VARĀH. BRH. S. 2,18.
Verz. d. Oxf. H. 16,b,24.

श्रुत्तघ् blind machen: दृशम् Çic. 9,21.

श्रुत्तघ्त्रात्री (?) lies 19,47,8. 30,1.

2. श्रुत्तघ् Speise: यावतो क्लान्धसः पिण्डानम्रति MBh. 3,13244. BHĀG.
P. 5,14,14. — Vgl. श्रुत्तघ्त्रासिक.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत्तघ् + 1. कर्), °करोति Jmd blind machen PRAB. 34,16.

श्रुत्तघ्त्रासिक m. N. pr. eines R̥shi mit dem patron. Çjā vā çvi Ind. St. 3,202,b.
PAÑĀV. BR. 8,5,14. — Vgl. श्रुत्तघ्त्रासिक.

श्रुत्तघ् vgl. कर्करान्धुक, धर्मान्धु, मेलान्धु.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत्तघ् + 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 291,b,
No. 707.

श्रुत्तघ् N. pr. eines Volkes VARĀH. BRH. S. 14,8. 16,11. 17,25. °पति
11,59. Verz. d. Oxf. H. 323,b,34. °देश 332,b,16. eine best. Mischlings-
kaste MBh. 13,2587. — Vgl. श्रुत्तघ्, मरुत्तघ्.

श्रुत्तघ् 3) f. श्रुत् Bez. einer 16jährigen nicht menstruirenden Jungfrau,
die bei der Durgā-Feier diese Göttin vertritt, ARNADĀKALPA im ÇKDr.
u. कुमारी.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रु + कल्प) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 101,b,26.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत् + दा) m. Geber von Speisen, Brodherr Spr. 4037.

श्रुत्तघ्त्रासिक wohl Bein. Çiva's RĀGA-TAR. 5,72.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत् + पाश) m. Nahrung als Band, das Leib und Seele zu-
sammenhält, GOBH. 2,3,19 in Ind. St. 5,370,1.

श्रुत्तघ्त्रासिक 1) wohl ein mit Speise gefülltes Gefäß: °शतमाकृत्य Verz.
d. Oxf. H. 14,b,31. — 2) N. einer Upanishad Ind. St. 3,326. — 3) f.
श्रुत् a) Bein. der Durgā Verz. d. Oxf. H. 109,b, No. 170. °कवच, °स्तोत्र
94,a,29. °मन्त्रा: 93,a,47. श्रुत्तघ्त्रासिकप्रकाशन 99,b,25. श्रुत्तघ्त्रासिकरी
भैरवी 93,b,18. श्रुत्तघ्त्रासिकरीमन्त्र 99,b,27. °भैरवीपूजापत्र 96,a,4. — b)
N. pr. eines Frauenzimmers (der Gatte heisst Mahādeva d. i. Çiva)
HALL 182.

श्रुत्तघ्त्रासिक n. nom. abstr. von श्रुत्तघ्त्रासिक Kap. 3,15.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत् + र) f. Schutz der Speisen (vor Gift) Verz. d. Oxf. H.
304,a,11.

श्रुत्तघ्त्रासिक TBa. 1,3,8,1.

श्रुत्तघ्त्रासिक s. u. 2. श्रुत्तघ्त्रासिक.

श्रुत्तघ्त्रासिक 1) f. श्रुत् AIT. Br. 3,25. ÇĀṆKH. BR. 27,5. Z. 4 lies 5,13,1 st. 4,13,1.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत् + श्रु) n. das Essen von Speise TS. 2,5,4,1.

श्रुत्तघ्त्रासिक zu streichen, da an der angeführten Stelle nach den Nach-
forschungen GOLDST. श्रुत्तघ्त्रासिक (dat.) st. श्रुत्तघ्त्रासिक; zu lesen ist.

श्रुत्तघ्त्रासिक (superlat. von श्रुत्तघ्त्रासिक mit Kürzung des Auslautes) adj. f.
(unter den Fingern) am meisten essend, Bez. des Zeigefingers ÇĀT. BR.
12,2,4,5; vgl. Ind. St. 4,366 und Schol. zu KĀT. ÇR. 4,1,10.

श्रुत्तघ्त्रासिक ist genau genommen nom. abstr. zu श्रुत्तघ्त्रासिक; Z. 1 ist 1. श्रुत्तघ्त्रासिक
st. श्रुत्तघ्त्रासिक zu lesen; Z. 2 5,10. 14,4,14 st. 6,4. 13,5,1. — श्रुत्तघ्त्रासिक M. 3,244
mit dem Schol. in श्रुत्तघ्त्रासिक + 2. श्रुत्तघ्त्रासिक = श्रुत्तघ्त्रासिक zu zerlegen ist nicht die ge-
ringste Veranlassung gegeben.

श्रुत्तघ्त्रासिक (von श्रुत्तघ्त्रासिक) nach Speise Verlangen haben; partic. dat. श्रुत्तघ्त्रासिक
RV. 4,2,7.

1. श्रुत्तघ्त्रासिक, नान्यच्छ्रेयः — श्रुत्तघ्त्रासिक तपसः kein anderes Heil als Spr. 1175.
श्रुत्तघ्त्रासिक etwas Anderes als Farbe BHĀSHĀP. 53. यत्र सर्वत्र श्रुत्तघ्त्रासिक नामि-
ष्यन्देर्नन्या वर्षाभ्यः (v. l. °रन्वर्षाभ्यः und °रन्वर्षतो व) ausser in
der Regenzeit ĀÇV. GRH. 4,5,7. श्रुत्तघ्त्रासिक so v. a. gewöhnlich. ge-
mein Spr. 132. Verz. d. Oxf. H. 207,a,14.

2. श्रुत्तघ्त्रासिक s. श्रुत्तघ्त्रासिक.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रु + गो) f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge
Skanda's MBh. 9,2645.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत्तघ्त्रासिक + 1. ङ) adj. von einem Andern erzeugt, nicht selbstge-
zeugt: नान्यतः पितृद्वेषी Spr. 1538.

श्रुत्तघ्त्रासिक lies 24,8 st. 30,19.

श्रुत्तघ्त्रासिक füge noch hinzu entweder der eine oder der andere (unter
Zweien) und vgl. RV. PRĀT. 11,17. 23.

श्रुत्तघ्त्रासिक = श्रुत्तघ्त्रासिक VS. PRĀT. 5,15.

श्रुत्तघ्त्रासिक (von श्रुत्तघ्त्रासिक) adv. auf den einen oder auf den andern
(von Zweien) KULL. zu M. 3,88.

श्रुत्तघ्त्रासिक Verz. d. Oxf. H. 231,b,27. 232,a,4.

श्रुत्तघ्त्रासिक (श्रुत्तघ्त्रासिक + ट) adj. nur auf einer Seite bezahnt TS. 5,5,